# छन्दः सङ्ग्रहः

काशीस्थ–राजकीय–संस्कृत–पाठशालीय–
प्रथमपरीक्षा–निर्द्धारितः



शारदाभवनम्, काशी ।

# ( २ ) अङ्कगणित

लेखक—पं० रामानन्द मिश्र ज्यौतिषाचार्य,

इसमें प्रथम परीक्षोपयोगी पाठ्य-विषयों का संस्कृत और हिन्दी में सरल और मनोरञ्जक प्रकार से समावेश किया गया है उदाहरण बड़े ही सरल और भिन्न २ प्रकार के दिये गये हैं। प्रथम परीक्षार्थियों के लिये पुस्तक की बड़े बड़े विद्वानों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। संस्कृत के परीक्षा-प्रश्नों का उत्तर देने में छात्रों को इससे अधिक सहायता मिलेगी।

# आशौच निर्णय।

लें०—वेदवाचस्पति श्रीविद्याधर शर्म्मा, अग्निहोत्री, वेदाचार्य।

इस पुस्तक की तारीफ करना व्यर्थ है। यह पुस्तक प्रत्येक हिन्दू को अपने घर रखनी चाहिये। इसमें विना किसी धर्मशास्त्री पण्डित के आप समझ सकेंगे किसे किसका कितना आशौच ( सूतक ) लगेगा। आशौच के सम्बन्ध में सब तरह की व्यवस्थाएँ काशी के प्रसिद्ध विद्वानों के हस्ताक्षर द्वारा प्रमाणित कर दी गयीं हैं। एक पुस्तक घर में रख लीजिये, बस, फिर किसी भी पण्डित से पूछने की ज़रूरत न रहेगी। पण्डितों के लिये तो इसकी अत्यन्त आवश्यकता है। पुस्तक शीघ्रही प्रकाशित होरही है। मूल्य सिर्फ चार आने।

प्राप्तिस्थान—

( १ ) शारदाभवन,

६३ अगस्त्य-कुण्ड, काशी

काशीस्थ-राजकीय-संस्कृत-पाठशालीय-

प्रथम-परीक्षा-पाठ्य-स्वीकृत—

# छन्दः संग्रह

(वृत्त-बोधः)

सम्पादकौ

श्रीकेदारनाथशर्म्मा सारस्वतः, शास्त्री, काव्यतीर्थः

श्रीअम्बिकादत्त उपाध्यायः, एम० ए०, शास्त्री, काव्यतीर्थः,

संशोधकः—

महामहोपाध्यायः

श्रीदेवीप्रसाद शुक्लः, कविचक्रवर्ती

प्रकाशकः—
संस्कृतग्रन्थ-भाण्डार,
काशी



मुद्रकः—
श्रीरामेश्वर पाठक
तारायन्त्रालय, काशी ।

# चतुर्थ संस्करण ।

एक वर्ष के बाद ही इसके चतुर्थ संस्करण की आवश्यकता से ही इसकी उपयोगिता और छात्र प्रियता का अनुमान करते हुए हम पाठकों के अत्यन्त कृतज्ञ हैं।

इस संस्करण से हमने संस्कृत ग्रन्थभण्डार की ओर से विक्रय विभाग हटाकर शारदाभवन के साथ मिला दिया है हमारी सभी पुस्तकें यहीं से प्राप्त होंगी।

संस्कृत-ग्रन्थ भण्डार<br>नागपञ्चमी. १९९० } श्री केदारनाथ शर्मा ।

---

इस पुस्तक के प्रकाशन में मेरे अभिन्नबन्धु श्रीअम्बिकादत्त उपाध्याय एम० ए०, सांख्ययोगाचार्य्य, काव्यतीर्थ ने जो सर्वाधिक सहायता दी है उसके सम्बन्ध में बन्धु के नाते हमें कुछ कहने का अधिकार नहीं है।

केदारनाथ शर्मा

# दो बातें

संस्कृत का छन्दःशास्त्र बड़ाही विस्तृत है। इसमें प्रस्तारों का बहुत विस्तार है। परन्तु श्रुतबोध इस शास्त्र की सबसे छोटी और सरल पुस्तक है। इसकी रचना बड़ी ही मनोरञ्जक है, लेकिन वह छोटे छोटे बालकों और बालिकाओं के लिए अत्यन्त अनुपयुक्त है। प्रायः संस्कृत पढ़े लिखे सभी लोग जानते हैं कि उसके पढ़ाने में कितनी दिक्कतें पड़ती हैं। छोटे तो क्या बड़े बड़े विद्यार्थियों में भी अध्यापकों और छात्रों को लजाना पड़ता है। कहीं बूढ़े अध्यापक और बालक-शिष्य हों तो फिर कहना ही क्या? इसीलिये इसे परीक्षा से हटाने के लिए बहुत दिनों से यत्न चल रहा था।

बनारस-गवर्नमेंटसंस्कृत-कालेज के परीक्षाधिकारियों की सुधार-चेष्टा से दो वर्षों से परीक्षा के पाठ्य-ग्रन्थों में विशेष सुधार हुआ है। उसी में प्रथम परीक्षा से श्रुतबोध को हटाकर उसके स्थान पर उन्हीं छन्दों के लक्षण और उनके अग्राम्य एवं अनश्लील उदाहरण रख दिए गए है जिन्हें परीक्षार्थी वृत्तरत्नाकर, छन्दोमञ्जरी और पिङ्गलसूत्र आदि किसी भी ग्रन्थ की सहायता से अभ्यास कर सकते हैं। इसलिए उनकी विशेष सुविधा के लिए हमने उन पाठ्य-स्वीकृत-छन्दों का एक छोटा संग्रह सम्पादित किया है। इसमें छन्दों के लक्षण वृत्तरत्नाकर और छन्दोमञ्जरी में से लिए गए हैं और उदाहरण भी वे ही दिए गए हैं जो प्रत्येक छात्र को प्रायः याद ही रहा करते हैं और अनेक उदाहरण तो उनके पाठ्य-काव्य रघुवंश, कुमार-सम्भव, मेघदूत आदि के हैं। इससे छात्रों को दो सुविधाएँ होती हैं, एक तो लक्षण छोटे २ याद करने पड़ते हैं और दूसरे उदाहरणों के श्लोक भी चलते फिरते और उन्हें कण्ठाग्र ही रहते हैं। अतः इस पुस्तक से उन्हें विशेष सहायता मिल सकती है।

इसे पढ़ने वाले छात्रों को केवल यह ध्यान रखना होगा कि किस गण में कितने लघु और कितने गुरु होते हैं इसके जान लेने से उन्हें अधिक सुविधा हो सकेगी। यह कार्य अध्यापकों का है कि वे एक बार छात्र को इस प्रकार परिभाषाएँ उदाहरणों में घटाकर बतला दें कि वे उसी नियम के अनुसार सब छन्दों को स्वयं समझ सकें।

श्रुतबोध में जो प्रकार रक्खा गया है वह अक्षरों के हिसाब से है उसमें बताया गया है कि अमुक छन्द के अमुक पाद में इतने अक्षर गुरु और इतने ह्रस्व हों तो उसे अमुक छन्द समझना चाहिए। वही प्रकार अध्यापक लोग इस में भी समझा सकते हैं। छात्र स्वयं ही चिन्हों को देखकर यह जान सकते हैं कि किस छन्द के किस चरण में कितने गुरु और कितने लघु होते हैं। इन विषयों में छात्रों को यह न समझना चाहिए कि यह एक दम नया प्रकार बतलाया गया है। केवल समझने का ही फेर है। इन्हीं छन्दों के याद किए हुए लक्षण और उदाहरण उन्हें मध्यमा, शास्त्री आदि परीक्षाओं के लिये वृत्तरत्नाकर एवं छन्दोमञ्जरी पढ़ने के समय भी काम दे सकते हैं।

इस पुस्तक में जो लक्षण के सूत्र दिए गए हैं उनकी सरल संस्कृत में व्याख्या की गई है और हिन्दी में अर्थ। उदाहरण के श्लोकों की व्याख्या की आवश्यकता नहीं है, ज्ञान के लिए उनका केवल अर्थ लिख दिया गया है। उदाहरणों की व्याख्या में समय नष्ट करने की आवश्यकता नहीं, उदाहरणों का फल छन्दों का लक्षण घटा देना मात्र है। उसी का ज्ञान आवश्यक है।

संस्कृत-ग्रन्थ-भाण्डार, काशी
गुरुपूर्णिमा, १९८७

सम्पादक—

काशीस्थ-राजकीय-संस्कृत-पाठशालीय-प्रथम-परीक्षा-
पाठ्यस्वीकृत-

# छन्दःसंग्रहः

[ वृत्त-बोधः ]

यतिगण-सेवित-चरणां
गुरु-लघुरूपां सुवृत्तमध्यान्ताम् ।
आर्य्यां वन्दे वरदां
सुरुचिरवर्णैरलङ्कृतामम्बाम् ॥

## छन्दःशास्त्र के प्रणेताओं का सम्प्रदाय-क्रम

संस्कृत-साहित्य में छन्द-शास्त्र का विशेष स्थान है । वेद के छः अङ्गों में छन्दशास्त्र एक परमावश्यक अङ्ग है । इसकी उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि व्याकरण शास्त्र की । संस्कृत साहित्य की रचना अधिकतर पद्यों में ही हुई है । गद्य बहुत कम है । इसके प्राचीनतम-साहित्य वेद प्रायः छन्दोबद्ध हैं : इसके बाद के साहित्य की रचना भी विशेष कर छन्दों ही हुई है । साहित्य की वृद्धि के साथ साथ छन्दों की संख्या में भी वृद्धि होती आई है । वेदों में सात छन्द पाए जाते हैं । वाल्मीकि रामायण में तेरह छन्दों का प्रयोग किया गया है ।

महाभारत में अठारह छन्द मिलते हैं। श्रीमद्भागवत में यह संख्या बढ़कर पचीस तक हो गई। इसके बाद के काव्यों में पचास प्रकार तक के छन्द दिए गए हैं। भिन्न भिन्न प्रकार के छन्दों की रचना में माघ कवि सिद्ध हस्त थे। कालिदास और भारवि आदि महाकवियों ने भी इतने छन्दों का प्रयोग नहीं किया है।

छन्दःशास्त्र का सब से प्राचीन ग्रन्थ पिङ्गल महर्षि कृत 'पिङ्गल-छन्दः शास्त्र' है। यद्यपि पिङ्गल-सूत्रों में कश्यप आदि प्राचीन आचार्यों के नाम दिये गये हैं। इसके एक टीकाकारने महादेव, सुरगुरु, दुश्च्यवन, कश्यप, माण्डव्य आदि अनेक आचार्यों का क्रम लिखा है, तथापि उपलब्ध ग्रन्थों में पिङ्गल ही प्राचीन ग्रन्थ है। कुछ लोग इसे नागराज पिङ्गल का बनाया हुआ कहते हैं। इस ग्रन्थ में सूत्रों द्वारा अनेक वैदिक और लौकिक छन्दों के लक्षण बतलाए गए हैं। अग्निपुराण में भी समस्त छन्दःशास्त्र विस्तारपूर्वक कहा गया है। इसका और पिङ्गल का वर्णन-प्रकार मिलता जुलता है। इसके बाद छन्दःशास्त्र पर अनेक ग्रन्थ बनाए गए। इनमें से श्रुतबोध, वाणी-भूषण, वृत्त-रत्नाकर, वृत्त-दर्पण, वृत्त, कौमुदी, सुवृत्त-तिलक और छन्दोमञ्जरी बहुत प्रसिद्ध हैं। केदारभट्ट-विरचित वृत्त-रत्नाकर, और गङ्गादास-विरचित छन्दोमञ्जरी का तो घर घर प्रचार है। ये दोनों ग्रन्थ भी इस विषय के अच्छे और मान्य ग्रन्थ हैं। महाकवि कालिदास के नाम से प्रसिद्ध श्रुतबोध बहुत ही सरस और छोटा सा ग्रन्थ है। इसमें प्रायः काम में आने वाले और परमावश्यक सभी छन्द ऐसी सरस भाषा में समझा दिए गए हैं कि छन्दों के लक्षण सुनते ही समझ में आ जाते हैं। परन्तु इसमें कुछ

ऐसे सम्बोधन दिए गए हैं जिनका अर्थ जानना बालकों और बालिकाओं के लिए नितान्त अनुचित है। अन्य छन्दोग्रन्थों में भी कहीं कहीं ऐसे शृङ्गार रस से पूर्ण और कहीं कहीं ग्राम्य और अश्लील शब्दों का निवेश किया गया है।

## जाति और वृत्त

छन्द दो भागों में विभक्त किए गए हैं:—(१) जाति और (२) वृत्त। जाति का नाम 'मात्रा-छन्द' और वृत्तों का नाम 'वर्णच्छन्द' है। मात्रा-छन्द वे हैं जो मात्रा की संख्या के अनुसार बनाए जाते हैं। वर्णच्छन्द वे हैं जो अक्षरों की संख्या के अनुसार बनाए जाते हैं। दोनों प्रकार के छन्दों में चार चार चरण अथवा पाद होते हैं। कभी कभी कुल छन्दों के लिए भी 'वृत्त' शब्द का प्रयोग होता है।

## वृत्तों के सम और विषम आदि भेद

'वृत्त' अर्थात् 'वर्णच्छन्द' तीन प्रकार के होते हैं। (१) समवृत्त, (२) अर्द्धसमवृत्त और (३) विषमवृत्त।

(१) समवृत्त—उसे कहते हैं जिसके चारों चरणों में बराबर अक्षर होते हैं। जैसे—वसन्ततिलका, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता आदि।

(२) अर्द्धसमवृत्त—उसे कहते हैं जिसका पहला चरण तीसरे के समान हो और दूसरा चौथे के समान। जैसे—पुष्पिताग्रा, वियोगिनी आदि।

(३) विषमवृत्त—उसे कहते हैं जिसके चारों चरण विषम हों अर्थात् एकसे न हों। जैसे—उद्गता आदि।

# गुरु-लघु-लेखन-रीति

इस शास्त्र में गुरु और लघु इन दो प्रकार के वर्णों से काम लिया जाता है। इन दोनों के लिए दो अक्षरों का प्रयोग किया जाता है—'ग' और 'ल'। 'ग' के माने गुरु और 'ल' के माने लघु है। इनके लिये दो संकेत भी हैं। गुरु का संकेत या चिन्ह (ऽ) है और लघु का संकेत (।) है। कहीं कहीं गुरुका संकेत (˘) और लघुका (-) संकेत होता है। लघुवर्णकी एक मात्रा होती है और गुरु वर्ण की दो मात्राएँ।

# गुरु-लघु-व्यवस्था

छन्दःशास्त्र में व्यञ्जन-रहित और व्यञ्जन-सहित स्वर को वर्ण कहते हैं। ये दो प्रकार के माने जाते हैं—ह्रस्व और दीर्घ। अ, इ, उ, ऋ, और लृ ये ह्रस्व स्वर हैं आ, ई, ऊ, ॠ, ॡ, ओ, औ, ये दीर्घ स्वर हैं। इस शास्त्र में ह्रस्व स्वर लघु के नाम से और दीर्घ स्वर गुरु के नाम से प्रसिद्ध है। परन्तु ह्रस्व स्वर में यदि विसर्ग या अनुस्वार लगा दिया जाय तो वे गुरु माने जाते हैं। इसी प्रकार संयुक्त अक्षर के पहले का ह्रस्व स्वर भी गुरु समझा जाता है। प्र, ह्र, क्र, ब्र इन चार अक्षरों के पूर्व का ह्रस्व अक्षर विकल्प से गुरु होता है। चरण के अन्त का अक्षर चाहे वह ह्रस्व हो चाहे दीर्घ आवश्यकतानुसार कभी गुरु माना जाता है और कभी लघु माना जाता है। जैसा कि कहा है:—

संयुक्ताद्यं दीर्घं सानुस्वारं विसर्गसंमिश्रम् ।
विज्ञेयमक्षरं गुरु पादान्तस्थं विकल्पेन ॥

संयुक्ताद्यम्—संयुक्त अक्षर के पूर्वका अक्षर गुरु होता है, जैसे 'तत्र' यहाँ पर 'त्र' संयुक्त है उसके पहिले आया हुआ 'त' गुरु (ऽ) है।

दीर्घम्— दीर्घ। जैसे-'का' 'गा' 'सा'।

सानुस्वारम्—अनुस्वार सहित अक्षर भी गुरु कहलाता है। जैसे—'कं' 'लं' इत्यादि।

विसर्गसंयुक्तम्—जिसके साथ विसर्ग हो। जैसे 'कः' यः' ये गुरु हैं।

पादान्तस्थं विकल्पेन—पाद के अन्त का अक्षर विकल्प से गुरु होता है चाहे वह दीर्घ हो चाहे ह्रस्व। आवश्यकता के अनुसार उसे गुरु और लघु दोनों मान सकते हैं।

मात्रिक छन्दों में मात्राओं की गणना में लघु वर्ण की एक मात्रा और गुरुवर्ण की दो मात्राएँ मानी जाती हैं। वर्ण-छन्दों में व्यञ्जनरहित या व्यञ्जनसहित स्वर का एक वर्ण माना जाता है।

## गण स्वरूप

तीन तीन वर्णों का एक एक गण होता है। इन वर्णों की गुरुता और लघुता के भेद से ८ गण होते हैं।

आदिमध्यावसानेषु भ-ज-सा यान्ति गौरवम्।
य-र-ता लाघवं यान्ति म-नौ तु गुरु लाघवं॥

आदिगुरुर्भगणः— ऽ । ।
मध्यगुरुर्जगणः— । ऽ ।
अन्त्यगुरुः सगणः— । । ऽ
आदिलघुर्यगणः— । ऽ ऽ

मध्यलघू रगणः— ऽ । ऽ

अन्त्यलघुः तगणः— ऽ ऽ ।

सर्वगुरुर्मगणः— ऽ ऽ ऽ

सर्वलघुर्नगणः— । । ।

याद करने के लिए निम्नलिखित श्लोक भी इसी विषय का दिया जाता है:—

मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो
भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः ।
जो गुरु मध्यगतो रलमध्यः
सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः ॥

नीचे दी गई तालिका में गणों के स्वरूप देवता और फल आदि बताए गए हैं ।

| गणनाम | मगण | यगण | रगण | सगण | तगण | जगण | भगण | नगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| स्वरूपम् | ऽऽऽ | ।ऽऽ | ऽ।ऽ | ।।ऽ | ऽऽ। | ।ऽ। | ऽ।। | ।।। |
| देवता | पृथ्वी | जल | अग्नि | वायु | गगन | सूर्य | चन्द्र | नाक |
| फलम् | श्री | वृद्धि | विनाश | भ्रमण | धननाश | रोग | सुयश | आयु |
| मित्रामित्रादिसंज्ञा | मित्र | भृत्य | शत्रु | शत्रु | उदासीन | उदासीन | भृत्य | मित्र |

मोभूमिस्त्रिगुरुः श्रियं दिशति, यो वृद्धिं जलं चादिलो,
रोऽग्निर्मध्यलघुर्विनाशमनिलो देशाटनं सोऽन्त्यगः ।
तो व्योमान्तलघुर्धनापहरणं, जोऽर्को रुजं मध्यगो,
भश्चन्द्रो यश उज्ज्वलं मुखगुरुर्नो नाक आयुस्त्रिलः ॥

# यतिनियम-स्थान-निरूपण

कई वर्णों के उच्चारण के अनन्तर जीभ को विश्राम लेने की आवश्यकता पड़ती है, इसीलिए छन्दों को सुविधा के अनुसार बीच बीच में तोड़ देते हैं। इन तोड़ों के विश्राम विराम, विरति, यति आदि अनेक नाम हैं। यति के नियमों के पालन न करने से छन्द भद्दा हो जाता है और इसी को यतिभङ्ग दोष कहते हैं।

चरण की समाप्ति में विराम होना चाहिए। श्लोकार्ध में तो अवश्य ही होना चाहिये। कहीं कहीं पर चार चार पाँच पाँच वर्णों के अनन्तर छन्द लक्षण में बताये गये नियम के अनुसार यति होती है। परन्तु यह यति पद-समाप्ति पर होनी चाहिये। सुविधा के अनुसार यदि पूर्व का भाग एक वर्ण का न हो तो पद के मध्य में भी विराम हो सकता है। प्र आदि उपसर्ग के अनन्तर विराम य करने में तिदोष नहीं होता।

॥ श्रीः ॥

# ॥ अथ छन्दो लक्षणानि ॥

## मात्रा छन्द

## ( १ )

### आर्य्या

यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि ।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्य्या ॥ १ ॥

व्याख्या—यस्याः प्रथमे पादे द्वादश मात्राः, तृतीयेऽपि द्वादशमात्राः, द्वितीये अष्टादशमात्राः, तथा चतुर्थे पञ्चदश मात्राः भवन्ति सा आर्य्या नामिका जातिर्भवति ।

भावर्थ—जिसके पहिले चरण में बारह मात्राएँ होती हैं, दूसरे में अठारह, तीसरे में भी बारह और चौथे में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं उसे आर्य्या कहते हैं ।

उदाहरण—

ऽ । । । । ऽ ऽ ऽ    ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । । । ऽ
सा जयति जगत्यार्य्या,    देवी दिवमुत्पतिष्णुरतिरुचिरा ।
ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ    ऽ । । ऽ ऽ । ऽ । । ऽ
या दृश्यतेऽम्बर·तले,    कंसवधोत्पातविद्युदिव ॥

अर्थ—आकाश में उड़ती हुई जो देवी कंसका नाश करनेवाली बिजली के समान दिखाई पड़ती है उस परम कान्तिमती ( विन्ध्यवासिनी ) आर्या की जय हो ।

(२)

आर्य्यागीतिः

## आद्यर्धसमा गीतिः ।

व्याख्या—आद्येन अर्द्धेन समं अन्त्यं अर्द्धं यस्याः सा आद्यर्द्धसमा । आर्य्यायाः पूर्वार्धतुल्यं यदि उत्तरार्धमपि भवेत्तदा सा आर्य्या गीतिरिति कथ्यते । आर्य्यागीतिरपि नामान्तरमस्याः । अयं निष्कर्षः—यस्याः प्रथमे पादे तृतीय पादे च द्वादशमात्राः, तथा द्वितीये चतुर्थे च पादे—अष्टादश-मात्राः स्युस्तस्या आर्य्याया गीतिरिति नाम स्यात् ।

भावार्थ—जिसका पूर्वार्ध के समान उत्तरार्ध भी हो उसे गीति कहते हैं। अर्थात् पहले और तीसरे चरण में बारह बारह मात्राएँ हों और दूसरे एवं चौथे में अठारह अठारह मात्राएँ हों तो उस आर्य्या को गीति कहते हैं ।

उदाहरण—

IIII SII IIS
यतिगण-सेवित-चरणां

II IISS ISISS S
गुरु-लघुरूपां सुवृत्तमध्यान्ताम् ।

SS SSIIS
आर्य्यां वन्दे वरदां

II IISSIS ISSS
सुरुचिरवर्णैरलङ्कृतामम्बाम् ॥

अर्थ—यतियों के समूह जिनके चरण की सेवा किया करते हैं, जो बड़े से बड़ा और छोटे से छोटा रूप धारण करती है, जिसकी कमर

सुडौल है और जो सुन्दर सुन्दर रंगों से शोभित है ऐसी वरदायनी श्रेष्ठ माता दुर्गा को प्रणाम करता हूँ ॥

( ३ )

## उपगीतिः

### अन्त्येनोपगीतिः ।

( आर्य्यापरार्द्धतुल्ये दलद्वये प्राहुरुपगीतिम् )

व्याख्या—यदि आर्य्यायाः पूर्वार्द्धमपि उत्तरार्द्धतुल्यं स्यात्तदा तत् उपगीतिनाम वृत्तं भवति। यस्याः प्रथमे तृतीये च चरणे द्वादशमात्राः, द्वितीये चतुर्थे च पञ्चदश मात्राः भवेयुः सा उपगीतिरिति भावः ।

भावार्थ—आर्य्या के उत्तर भाग के समान यदि पूर्व भाग भी हो तो उपगीति नामक छन्द होता है । अर्थात् इसके पहिले और तीसरे चरण में बारह बारह मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में पन्द्रह पन्द्रह मात्राएँ होती हैं ।

उदाहरण—

S S S I I S I I   S S S S I S I I S
गान्धर्वं मकरध्वज—देवस्यास्त्रं जगद्विजयि ।

I I I I S I I S I I   I I S S S I S S S
इति समवेत्य मुमुक्षुभि—रुपगीतिस्त्यज्यते देशः ॥

अर्थ—संगीत संसारभर को परास्त करने वाला कामदेव का अस्त्र है । इसलिए मोक्ष चाहने वाले संगीत के समीप का स्थान छोड़ देते हैं। अर्थात् जहां गानाबजाना होता है वहां मोक्ष चाहने वाले तपस्वी, योगी आदि नहीं रहते ।

## अक्षरच्छन्दांसि

( ४ )

### अक्षरपंक्तिः

### भ्गौ गिति 'पंक्तिः'

व्याख्या—यत्र पूर्वं भगणः तदनन्तरं द्वौ गुरुवर्णौ स्यातां तत् पंक्तिच्छन्दः। पञ्चाक्षरं छन्दः। पादान्ते यतिः। तथा च श्रुतबोधे—

आद्यचतुर्थं पञ्चकं चेत् ।
यत्र गुरुः स्यात् साक्षरपंक्तिः ॥

भावार्थ—जहाँ एक भगण और उसके अनन्तर दो गुरु वर्ण हों उसे अक्षर पंक्ति छन्द कहते हैं प्रत्येक चरण में पहिला, चौथा और पाँचवा अक्षर गुरु होना चाहिए। इसके प्रत्येक चरण में पाँच पाँच अक्षर होते हैं। पाद के अन्त में यति होती है।

उदाहरण—

भ. ग.ग.

S । । S S

कृष्ण-सनाथा तर्णक-पंक्तिः ।
यामुन-कच्छे चारु चचार ॥

अर्थ—कृष्णजी की रखवाली में यमुना नदी के किनारे चरता हुआ बछड़ों का झुण्ड चित्त को हरे लेता था।

( ५ )

### शशिवदना

### शशिवदना न्यौ ।

व्याख्या—यस्य पादे नगण-यगणौ भवेताम्, तत् शशिवदना नाम वृत्तं स्यात्। षडक्षरं छन्दः। पादान्ते यतिः।

भावार्थ—जिसके प्रत्येक चरण में नगण और यगण हों, अर्थात् पांचवां और छठवां वर्ण गुरु और पहिले चार वर्ण लघु हों उसे 'शशिवदना' छन्द कहते हैं। छः अक्षरों का छन्द है। पाद के अन्त में विराम होता है।

उदाहरण—

न० य०

। । । । ऽ ऽ

जय जय विष्णो ! त्रिभुवनजिष्णो !

अपनय दुःखम्, प्रवितर सौख्यम् ॥

अर्थ—हे त्रिभुवन को जीतनेवाले विष्णु! तुम्हारी जय हो। मेरे दुःखों को दूर कर सुख दीजिए।

( ६ )

## मदलेखा

### म्सौ गः स्याद् मदलेखा

व्याख्या—यस्य पादे मगणः, सगणः तदनन्तरञ्चैको गुरुवर्णः स्यात्, तत् मदलेखानामकं छन्दः। सप्ताक्षरमिदं छन्दः। पादान्ते यतिः।

भावार्थ—जिसके प्रत्येक पाद में मगण, सगण और उसके बाद एक गुरु वर्ण हो उसे 'मदलेखा' छन्द कहते हैं। अर्थात् जिसके प्रत्येक पाद के सात वर्णों में पाँचवां और छठवां लघु हो और बाकी गुरु हों उसे 'मदलेखा' कहते हैं। सात अक्षरों का छन्द है।

उदाहरण—

म. स. गु.

ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ

रङ्गे बाहुविरुग्णात् दन्तीन्द्रान्मदलेखा ।

लग्नाऽभून्मुरशत्रौ कस्तूरीरसचर्चा ॥

अर्थ—युद्धभूमि में कृष्ण ने अपने हाथों से कुवलयापीड़ नामक हाथी को पछाड़ा उससे उनके हाथों में जो उसका सुगन्धित मद-जल लग गया वह कस्तूरी के लेप के समान मालूम होने लगा ।

( ७ )

श्लोक ( अनुष्टुप् )

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम् ।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ॥

अथवा—

पञ्चमं लघु सर्वत्र सप्तमं द्विचतुर्थयोः ।
षष्ठं गुरु विजानीयादेतत्पद्यस्य लक्षणम् ॥

व्याख्या—श्लोके अनुष्टुबाख्ये पद्ये षष्ठमक्षरं गुरु भवति, पञ्चमं लघु, सप्तमञ्च द्वितीयचतुर्थयोः पादयोः लघु, प्रथमतृतीययोः दीर्घं भवति । इदं हि अनुष्टुबाख्यम्प्रसिद्धमष्टाक्षरं वृत्तम् । पादान्तेऽत्र यतिः ।

भावार्थ—जिसके प्रत्येक पाद में छठवाँ अक्षर गुरु, पाँचवाँ लघु, और सातवाँ दूसरे चौथे पाद में लघु और पहिले तीसरे में दीर्घ हो तो उसे अनुष्टुप् छन्द या श्लोक कहते हैं । इसका प्रत्येक पाद आठ अक्षर का होता है । पाद के अन्त में यति होती है ।

उदाहरण—

।ऽऽ ।ऽ।
वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
।ऽऽ ।ऽ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती-परमेश्वरौ ।

अर्थ—वाणी और अर्थ की प्राप्ति के लिये मैं ( कालिदास ) वाणी और अर्थ के समान मिले हुये और जगत् के माता पिता पार्वती और परमेश्वर को प्रणाम करता हूँ ॥

( ८ )

विद्युन्माला

## मो मो गो गो विद्युन्माला

व्याख्या—यत्र मगणद्वयं गुरुद्वयञ्च स्यात् तत् विद्युन्माला वृत्तं भवति । अर्थात् विद्युन्मालायां सर्व वर्णा दीर्घा भवन्ति, चतुर्भिश्चतुर्भिश्च यतिर्भवति ।

भावार्थ—जिस छन्द के प्रत्येक पाद में दो मगण और उसके आगे के दो अक्षर गुरु हों और चार चार अक्षरों पर विश्राम हो तो उसे विद्युन्माला छन्द कहते हैं । यह भी आठ अक्षरों का छन्द है ।

उदाहरण—

म. म. ग. ग.

ऽ ऽऽऽ ऽऽऽ ऽ ऽ

वासोवल्ली विद्युन्माला वर्हश्रेणी शाक्रश्चापः ।

यस्मिन् स स्तात् तापोच्छित्त्यै गोमध्यस्थः कृष्णाम्भोदः ॥

अर्थ—जिसका पीताम्बर विजली है और सिर पर लगाया हुआ मोर-पङ्ख इन्द्रके रंग-विरंगे धनुष की शोभा धारण करता है वह गायों और बछड़ों के बीच रहने वाला कृष्णरूपी मेघ ( बादल ) हमारे सन्ताप को दूर करे ।

( ९ )

नगस्वरूपिणी ( प्रमाणिका )

## प्रमाणिका जरौ लगौ

व्याख्या—यस्याः पादे पूर्वं जगण-रगणौ, ततो लघुरेकः, ततश्चैको गुरुर्भवति, सा नगस्वरूपिणीति बुधैः कथ्यते, तस्या अपरं नाम प्रमाणिका वृत्तमिति । अस्मिन् वृत्ते

चतुर्भिश्चतुर्भिर्यतिश्चेत्तदा कर्णसुखप्रदा भवति । इदमपि वृत्त-मष्टाक्षरम् ।

अर्थ—जिसके प्रत्येक पाद में जगण, रगण और उसके बाद एक लघु और एक गुरु हो उसे नगस्वरूपिणी या प्रमाणिका कहते हैं । इसमें भी आठ २ अक्षरों का एक एक पाद होता है ।

उदाहरण—

ज र ल गु

। ऽ । ऽ । ऽ । ऽ

मलल्लिका मचर्चिका प्रकाण्डमुद्धतल्लजौ ।
प्रशस्तवाचकान्यमून्ययः शुभावहो विधिः ॥

( १० )

## माणवकम्

### भात्तलगा माणवकम्

व्याख्या—यस्य पादे भगणः, तगणः, लघुरेको गुरुश्चैकः स्यात् तत् माणवकं नाम वृत्तं भवति । अस्य माणवकाक्रीडम्-इत्यपि नामान्तरम् । इदमपि—अष्टाक्षरं वृत्तम् । अत्र चतुर्भि-श्चतुर्भिर्विरामो भवति ।

भावार्थ—जिसके प्रत्येक पाद में भगण, तगण और एक लघु एवं एक गुरु अक्षर हो उसे माणवक कहते हैं इसका दूसरा नाम—माणवका-क्रीड भी है । यह भी आठ अक्षरों का छन्द है । चार चार वर्णों पर विराम होता है ।

उदाहरण—

भ. त. ल.गु.

ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ

कोकवधू-शोकहरं पद्मवनी-बोधकरम् ।
गाढतमो नाशकरम्, नौमितरामुष्णकरम् ॥

अर्थ—चकई के शोक को हरने वाले, कमलवनों को खिलाने वाले और गहिरे अन्धकार को दूर करने वाले सूर्य भगवान् को अनेक प्रणाम करता हूं ।।

( ११ )

## मणिबन्ध ( मणिमध्य )

स्यान्मणिबन्धं चेद्भमसाः ।

व्याख्या—यदि चरणेषु भगण-मगण-सगणाः स्युस्तदा मणिबन्धं नाम छन्दो भवति । नवाक्षरं छन्दः, पञ्चभिश्च-तुर्भिश्च यतिः । 'मणिबन्ध' मिति श्रुतबोधेऽस्य नाम । 'मणि-मध्यमि' ति वृत्तरत्नाकरादिषु नाम ।

भावार्थ—यदि चरणों में भगण, मगण और सगण हों तो 'मणिबन्ध' नामक छन्द होता है । श्रुतबोध में इस छन्द का नाम 'मणिबन्ध' बताया गया है । अन्य पुस्तकों में इसका नाम 'मणिमध्य' बताया गया है । यह नौ अक्षरों का छन्द है । पांच और चार अक्षरों पर विराम होता है ।

उदाहरण—

भ म स

S I I S S S I I S

कालिय भोगाभोगगत-
स्तन्मणिमध्यस्फीतरुचा ।
चित्रपदाभो नन्दसुत-
श्चारुननर्त्त स्मेरमुखः ॥

अर्थ—कालियनाग के फैले हुए फणों पर खड़े हुए, उसके बीचोबीच चमकती हुई मणि से स्वच्छ सुन्दर शोभावाले मुसकुराते हुए भगवान् कृष्ण आनन्द से नाचने लगे ।

( १२ )

## चम्पक माला ( रुक्मवती )

### 'रुक्मवती' सा यत्र भमस्गाः

व्याख्या—यत्र पादे भगण-मगण-सगणाः, तत्परं च गुरुरेकः स्यात् सा 'रुक्मवती' नामकं छन्दः । अस्यैव चम्पकमालेति नामान्तरम् । 'रूपवती' इत्यपि क्वचिदस्य नामं । दशाक्षरं छन्दः ! पादान्ते यतिः ।

भावार्थ—जिसके प्रत्येक चरण में भगण-मगण-सगण हों और अन्त में एक गुरु हो उसे रुक्मवती छन्द कहते हैं । 'रूपवती, और 'चम्पकमाला' भी इसके नाम हैं । श्रुतबोध में यह 'चम्पकमाला' के नाम से कहा गया है । यह दस अक्षरों का छन्द है और इसमें पादान्त में विराम होता है ।

उदाहरण—

भ म स ग
ऽ।। ऽऽऽ ।।ऽ ऽ

कायमनोवाक्यैः परिशुद्धै-
यस्य सदा कंसद्विषि भक्तिः ।
राज्यपदे हर्म्यालिरुदारा
रुक्मवती विघ्नः खलु तस्य ॥

अर्थ—शुद्ध शरीर, शुद्ध मन और शुद्ध वचन से कृष्ण में जिसकी सदा भक्ति रहती है, उसे राजसिंहासन पर बैठना और ऊँची ऊँची सोने की अट्टालिकाएँ विघ्न के समान मालूम होती हैं ।

( १३ )

## इन्द्रवज्रा

### स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः

व्याख्या—यत्र पादे तगणद्वयम्, जगणः, ततश्च गुरुद्वयं भवति, तत् इन्द्रवज्रानामकं वृत्तं भवति । अत्र पादान्ते यतिर्भवति । एकादशाक्षरमिदं वृत्तम् ।

भावार्थ—जिस छन्द के प्रत्येक पाद में दो तगण, जगण और दो गुरु वर्ण होते हैं उसे इन्द्रवज्रा कहते हैं । इस छन्द के प्रत्येक पाद में ग्यारह अक्षर होते हैं और पाद के अन्त में विराम होता है ।

उदाहरण—

त त ज ग ग
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

ये दुष्ट-दैत्या इह मर्त्यलोके
द्वेषं व्यधुर्गोद्विजदेवसंघे ।
तानिन्द्रवज्रादपि दारुणाङ्गान्
व्याजीवयद् यः सततं नमस्ते ॥

अर्थ—जो दुष्ट दैत्य इस मर्त्यलोक में गौओं, ब्राह्मणों और देवताओं को दुःख पहुँचाया करते थे उन इन्द्र के वज्र से भी कठोर शरीरवाले दैत्यों को जिसने मार डाला उस भगवान् विष्णु को बार बार प्रणाम है ।

( १४ )

## उपेन्द्रवज्रा

### उपेन्द्रवज्रा प्रथमे लघौ सा

व्याख्या—प्रथमे अक्षरे लघौ सति सा=इन्द्रवज्रा उपेन्द्रवज्रेति नाम्ना प्रोच्यते । अर्थात् जगणः, तगणः, पुनश्च जगणः, तदनन्तरं द्वौ गुरू यदि स्यातां तदा सा उपेन्द्रवज्रेति कविभिः प्रोच्यते । इदमप्येकादशाक्षरं वृत्तम् । अत्रापि पादान्ते यतिः ।

भावार्थ—इन्द्रवज्रा का पहिला अक्षर यदि ह्रस्व हो तो उसका नाम उपेन्द्रवज्रा होता है। अर्थात् जिसके प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण और दो गुरु हों तो उसे उपेन्द्रवज्रा कहना चाहिए। यह ग्यारह अक्षरों के पाद का छन्द है। इसमें भी पाद के अन्त में विराम होता है।

उदाहरण—

ज त ज गु.गु.

। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥

अर्थ—हे देवदेव! आपही मेरे माता-पिता हैं, आपही मेरे बन्धु और मित्र हैं, विद्या तथा धन भी आपही हैं, आपही मेरे सब कुछ हैं।

(१५)

उपजातिः

अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः ।
एवं किलान्यास्वपि मिश्रितासु वदन्ति जातिष्विदमेव नाम ॥

व्याख्या—यदीयौ=यस्य वृत्तस्य सम्बन्धिनौ, पादौ=चरणद्वयम्, अनन्तरं=प्रागेव, उदीरितयोः=इन्द्रवज्रोपेन्द्रवज्रयोः, लक्ष्मभाजौ=चिह्नधारिणौ, ताः उपजातयः=तन्नामकानि वृत्तानि। एवं प्रकारेण अन्यासु अपि मिश्रितासु=उभयलक्षणसमन्वितासु इदमेव=उपजातिरिति नाम भवति। यथा—इन्द्रवज्रोपेन्द्रवज्रयोः सम्मिश्रणेनोपजातयो भवन्ति,

तथैव वंशस्थ-इन्द्रवंशयोः सम्मिश्रणेनापि—उपजातयो भवन्ति ।

भावार्थ—जिन छन्दों के पाद पहले कहे हुए इन्द्रवज्रा और उपेन्द्र-वज्रा के लक्षण वाले हों, उन छन्दों का नाम उपजाति है। अर्थात् एक पाद इन्द्रवज्रा का हो और दूसरा उपेन्द्रवज्रा का। या एक पाद उपेन्द्रवज्रा का दूसरा इन्द्रवज्रा का। इसी प्रकार अन्य छन्दों के पादों के सम्मिश्रण से भी अनेक प्रकार के उपजाति छन्द होते हैं। इन्द्रवंशा और वंशस्थ इन दो छन्दों के चरणों के सम्मिश्रण से उपजातियाँ बनती हैं।

उदाहरण—

ज. त. ज. ग.ग.

ISI SSI ISI SS

अथ प्रजानामधिपः प्रभाते

त. त. ज. ग.ग.

SSI SSI ISI SS

जायाप्रतिग्राहितगन्धमाल्याम्

ज. त. ज. ग.ग.

ISI SSI ISI SS

वनाय पीतप्रतिवद्धवत्सां

ज. त. ज. ग.ग.

ISI SSI ISI SS

यशोधनो धेनुमृषेर्मुमोच ॥

अर्थ—रात बीतने के बाद यश के धनी राजा दिलीप ने सुदक्षिणा द्वारा माला चन्दन आदिसे पूजित और दूध पिलाकर बांधे गए बछड़े वाली वसिष्ठ की गाय नन्दिनी को जंगल में जाने के लिए छोड़ा ॥

विवरण—यहाँ पर प्रथम चरण उपेन्द्रवज्रा का है, दूसरा चरण इन्द्रवज्रा के लक्षण से मिलता है, तीसरा चरण फिर उपेन्द्रवज्रा का है और चौथा भी उपेन्द्रवज्रा का है। इसी प्रकार अन्य उदाहरणों में समझना चाहिए।

( १६ )

शालिनी

## मात् तौ गौ चेत् शालिनी वेदलोकैः

व्याख्या—मात्=मगणात्, परं तौ=तगणद्वयम्, गौ=गुरुद्वयञ्च यदि स्यात्, तदा तद् वृत्तं 'शालिनी' नामकं भवति। इदमेकादशाक्षरं छन्दः। अत्र वृत्ते चतुर्षु सप्तसु च यतिर्भवति।

भावार्थ—पहिले मगण हो, उसके बाद दो तगण और दो गुरु हों तो उसे शालिनी नामक छन्द कहते हैं। यह छन्द भी ग्यारह अक्षरों का होता है। इसमें चार चार और सात सात अक्षरों पर विश्राम होता है।

उदाहरण—

म. त. त. ग.ग.

ऽऽऽ ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ

आरभ्यन्ते शर्मकर्माणि नूनम्
प्राज्ञैर्लोके वाच्यतामात्रभीतैः।
तन्निष्पत्तौ वासुदेवः प्रमाणम्
को वा वक्ता, कार्यकर्ताहमस्मि॥

अर्थ—विद्वान लोग शुभ कार्यों को केवल इस लिए प्रारम्भ करते हैं कि लोग उनकी निन्दा न करें अर्थात उन्हें अकर्मण्य या बुरा न कहें किन्तु उन कार्यों का सफल होना भगवान वासुदेव के ही हाथ है। यह कौन कह सकता है कि इस काम को मैंने किया? अर्थात् कोई नहीं। सारांश यह कि अच्छे कार्य भगवान् की कृपा से ही पूर्ण होते हैं उसमें मनुष्य को यह अभिमान न करना चाहिए कि इसे मैंने किया।

( १७ )

## स्वागता

### स्वागता रनभगैर्गुरुणा च

व्याख्या—रगण-नगण-भगणेभ्यः परं यत्र वर्णद्वयं गुरु स्यात् तत् स्वागता नामधेयं छन्दः कथ्यते । अत्र पादान्तगतश्चकारः पादान्तवर्णं लघुमपि गुरुमेव बोधयति । एकादशाक्षरं छन्दः । अत्रापि पादान्ते यतिः ।

भावार्थ—जिसके प्रत्येक पाद में रगण, नगण, भगण और उसके बाद दो गुरु हों उसे स्वागता छन्द कहते हैं । इसमें भी पाद के अन्त में विश्राम होता है । ग्यारह अक्षरों के चरण होते हैं ।

उदाहरण—

र. न. भ. ग.ग.

ऽ।ऽ।।।ऽ।।ऽऽ

रत्नभङ्गविमलैर्गुणतुङ्गै—
रर्थिनामभिमतार्पणसक्तैः ।
स्वागताभिमुखनम्रशिरस्कै—
र्जीव्यते जगति साधुभिरेव ॥—क्षेमेन्द्रस्य

अर्थ—हीरे के टुकड़े के समान स्वच्छ और प्रकाशमान, गुणों से माननीय, याचकों की इच्छा पूर्ण करने वाले और स्वागत के लिए मस्तक को सदा नम्र रखने वाले सज्जनों का जीवन ही सच्चा जीवन है ।

( १८ )

## रथोद्धता

### रात् परैर्नरलगै रथोद्धता

व्याख्या—रात्=रगणात् परैः क्रमात् न-र-ल-गैः=नगण-

रगण-लघु-गुरुभिः प्रतिपादं स्थितैरिति शेषः, रथोद्धतानाम वृत्तं भवति। एकादशाक्षरं छन्दः। अत्र पादान्ते विरामः।

भावार्थ—जिसके प्रत्येक पाद में रगण, नगण, रगण हों और उनके पीछे एक वर्ण लघु और एक दीर्घ हो उसे रथोद्धता वृत्त कहते हैं। इसमें पादान्त में यति होती है। यह ग्यारह अक्षरों का छन्द होता है।

उदाहरण—

र. न. र. ल.ग.

ऽ । ऽ । । । ऽ । ऽ । ऽ

कौशिकेन स किल क्षितीश्वरो
रामम्ध्वर-विघान्त-शान्तये।
काक-पक्षधर मेत्य याचित-
स्तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते॥

अर्थ—विश्वामित्र ऋषि ने यज्ञ के विघ्नों (राक्षसों) को शान्त करने के लिए राजा दशरथ से काकपक्ष धारी बालक रामचन्द्र की याचना की क्योंकि तेजस्वियों की अवस्था नहीं देखी जाती।

(१९)

## दोधक

### दोधकमिच्छति भत्रितयाद् गौ

व्याख्या—भगणत्रयम्, गुरुद्वयञ्च यस्य पादेषु भवेत् तत् दोधकं नाम वृत्तम्। एकादशाक्षरं छन्दः। अत्रापि विरामः पादान्त एव भवति।

भावार्थ—जिसके प्रत्येक चरण में तीन भगण और उसके बाद दो गुरु हों उसे दोधक छन्द कहते हैं। इसमें पाद के अन्त में विराम होता है। यह ग्यारह अक्षरों का छन्द है।

उदाहरण—

भ. भ. भ. ग. ग

ऽ । । ऽ । । ऽ । ।

देव ! सदोग्धकदम्बतलस्थ !
श्रीधर ! तावकनामपदं मे ।
कण्ठतलेऽसुविनिर्गमकाले
स्वल्पमपि क्षणमेष्यति योगम् ?

अर्थ—हे बछवों के सहित कदम्ब के तले खड़े हुये श्रीधर देव ! क्या मेरे प्राण निकलने के समय तुम्हारा नाम क्षण भर के लिये भी मेरे गले में आएगा ?

( २० )

## वंशस्थविल

**जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ ।**

व्याख्या—यस्य चरणेषु जगण-तगण-जगण-रगणाः क्रमशो भवन्ति, तत् द्वादशाक्षरं 'वंशस्थम्' छन्दः। वंशस्थविलं, वंशस्तनितमित्यस्यैव नामान्तरम् । यतिः पादान्ते भवति ।

भावार्थ—जिसके सभी चरणों में क्रमशः जगण, तगण, जगण और रगण होते हैं उस बारह अक्षर वाले छन्द का नाम वंशस्थ है । इसे वंशस्थविल और वंशस्तनित भी कहते हैं। इसमें भी विश्राम पादान्त में ही होता है ।

उदाहरणम्—

ज. त. ज. र.

। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये
सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।

सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते
सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः ॥

अर्थ—हजार मूर्ति धारण करने वाले, हजार पैर, हजार आंख, हजार सिर, हजार जांघ और हजार हाथों से सुशोभित, हजार नामों वाले और हजारों करोड़ युगों को धारण करने वाले नित्य पुरुष परमात्मा को प्रणाम है।

( २१ )

## इन्द्रवंशा

### तच्चेन्द्रवंशा प्रथमाक्षरे गुरौ ।

व्याख्या—वंशस्थलक्षणे यदि प्रथमाक्षरं दीर्घं स्यात्, अर्थात्—तगणद्वयम्, जगणः, रगणश्च यदि स्याच्चदा इन्द्रवंशा नामकं वृत्तमुच्यते द्वादशाक्षरं वृत्तम् । पादान्ते च यतिः ।

भावार्थ—वंशस्थ के चरण का पहिला अक्षर यदि गुरु हो जाय तो उसका नाम इन्द्रवंशा होता है। अर्थात् दो तगण एक जगण और तब एक रगण हो तो उसे इन्द्रवंशा कहते हैं। यह छन्द बारह अक्षरों का होता है। इसमें विराम चरण के अन्त में होता है।

उदाहरण—

त त ज र-
SSI SSI ISI SIS
कुर्वीत यो देवगुरुद्विजन्मना-
मुर्वीपतिः पालनमर्थलिप्सया ।
तस्येन्द्रवंशेऽपि गृहीतजन्मनः
सञ्जायते श्रीः प्रतिकूलवर्तिनी ॥

अर्थ—जो राजा देवता, गुरु और ब्राह्मणों का पालन पैसे के लाभ

से करता है, वह चाहे इन्द्रवंश में ही क्यों न पैदा हुआ हो, राजलक्ष्मी इसे छोड़कर दूर हट जाती है।

## ( २२ )

## भुजङ्गप्रयात

## 'भुजङ्गप्रयातम्' चतुर्भिर्यकारैः

व्याख्या—यत्र यगणचतुष्टयं भवेत् तत् भुजङ्गप्रयातं नाम वृत्तं भवति द्वादशाक्षरम्। पादान्ते यतिः।

भावार्थ—जिसके चरणो में चार यगण हों उसे भुजङ्गप्रयात छन्द कहते हैं। अक्षर सङ्ख्या—बारह। पादान्त में यति होती है।

उदाहरणम्—

य य य य

। ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

पुरः साधुवद् भाति मिथ्याविनीतः,
परोक्षे करोत्यर्थनाशं हताशः
भुजङ्गप्रयातोपमं यस्य चित्तम्,
त्यजेत्तादृशं दुर्विनीतं कुमित्रम्॥

अर्थ—सामने जो बनावटी नम्रता दिखला कर सज्जनता प्रकट करता है, और जो दुष्ट पीठ पीछे काम बिगाड़ता है एवं जिसका चित्त सांप की गति के समान कुटिल है ऐसे दुष्ट कुमित्र का परित्याग कर देना चाहिये।

## ( २३ )

## प्रमिताक्षरा

## प्रमिताक्षरा सजससैः कथिता

व्याख्या—पूर्वं सगण-जगणौ पुनः सगणद्वयञ्च यत्र भवति तत् प्रमिताक्षरा नाम छन्दः। द्वादशाक्षरमिदं वृत्तम्। पादान्ते यतिः।

भावार्थ—जिसके चरणों में क्रम से सगण, जगण और दो सगण हों उसे प्रमिताक्षरा कहते हैं। बारह अक्षरों का छन्द है यहां पाद के अन्त में यति होती है।

उदाहरण—

स. ज. स. स.

। । ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ

विहगाः कदम्ब-सुरभाविह गाः
कलयन्त्यनुक्षण मनेकलयम् ।
भ्रमयन्नपैति मुहुरभ्रमयं
पवनश्च धूतनवनीपवनः ॥

अर्थ—इस कदम्ब की सुगन्ध वाले ( रैवतक ) पर्वत पर पक्षिगण तरह तरह की लय में गाने गा रहे हैं और नए कदम्बों के वन को कँपाती हुई तथा बादलों को घुमाती हुई यह शीतल सुगन्ध वायु भी चल रही है।

( २४ )

## द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ

व्याख्या—नभौ=नगण-भगणौ, तथा भरौ=भगण-रगणौ यत्र चरणे स्यातां तत् द्रुत-विलम्बितं नामच्छन्दः । आह नाग-राज इति शेषः । पादान्ते यतिः । द्वादशाक्षरमिदं वृत्तम् ।

भावार्थ—जिसके प्रत्येक चरण में नगण, भगण, भगण, रगण क्रमशः होते हैं उसे द्रुतविलम्बित छन्द कहते हैं। यह बारह अक्षरों का छन्द है। इसमें पदान्त में विराम होता है।

उदाहरण—

न. भ. भ. र.

। । । ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ

जनपदे न गदः पदमादधा-
वभिभवः कुत एव सपत्नजः।
क्षितिरभूत् फलवत्यजनन्दने
शमरतेऽमरतेजसि पार्थिवे॥

अर्थ—अज के पुत्र, देव-तुल्य और शान्ति-प्रिय दशरथ के राजा होने पर देश में बीमारी का नाम भी न रह गया, शत्रुओं की चढ़ाई और उत्पात तो होता ही कहाँ? पृथिवी भी विशेष रूप से अन्न आदि उत्पन्न करने लगी।

( २५ )

## वैश्वदेवी

### बाणाश्वैश्छिन्ना वैश्वदेवी ममौ यौ

व्याख्या—बाणाः=पञ्च, अश्वाः=सप्त, एभिः छिन्ना=यतिमती। ममौ=मगणद्वयम्, यगणद्वयञ्च यत्र भवेत् तत् वैश्वदेवीनामकं वृत्तम्। द्वादशाक्षरं छन्दः।

भावार्थ—जिसके प्रत्येक पाद में दो मगण और दो यगण होते हैं उसे वैश्वदेवी छन्द कहते हैं। इसमें पाँच और सात अक्षरों पर विराम होता है। बारह अक्षरों का छन्द है।

उदाहरण—

म. म. य. य.

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

अर्चामन्येषां त्वं विहायामराणाम्
अद्वैतेनैकं विष्णुमभ्यर्च्य भक्त्या।

तत्राशेषात्मन्यर्चिते भाविनी ते
भ्रातः ! सम्पन्नाराधना वैश्वदेवी ॥

अर्थ—हे भाई ! तुम और सब देवताओं की पूजा छोड़ एकमात्र विष्णु को अद्वितीय देवता समझ कर भक्ति से उनकी पूजा करो । सम्पूर्ण विश्वरूप ( विराट् ) उन विष्णु की पूजा करने पर समस्त संसार के देवताओं की पूजा स्वयं हो जायगी ।

( २६ )

तोटक

वद तोटकमब्धि सकारयुतम् ।

व्याख्या—यत्र चरणेषु सगणचतुष्टयं स्यात् तत् तोटकं नाम छन्दः । द्वादशाक्षरमिदं वृत्तम् । पादान्ते यतिः ।

भावार्थ—जहां चार सगण हों वह तोटक छन्द कहा जाता है ।

उदाहरण—

स. स. स. स.

। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ

यमुना तटमच्युत केलिकला-
लसदङ्घ्रिसरोरुह,सङ्ग-रुचिम् ।
मुदितोऽट कलेरपनेतुमघं
यदि चेच्छसि जन्म निजं सफलम् ॥

अर्थ—हे मनुष्य ! यदि कलियुग के पाप से बचना चाहते हो और अपने जन्म को सफल करना चाहते हो तो भगवान् कृष्ण के खेलने कूदने और नाचने में शोभित होते हुए चरणों से पवित्र कालिन्दी के कूल पर विचरण करो ।

( २७ )

## प्रहर्षिणी

### त्र्याशाभिर्मनजरगाः प्रहर्षिणीयम्

व्याख्या—यस्य चरणेषु म-न-ज-रगाः—मगणः, नगणः, जगणः, रगणः, एकश्च गुरुः स्यात्, तथा त्रिभिः, आशाभिः,= दिग्भिः, दशभिरिति भावः, विरतिः स्यात् तत् प्रहर्षिणी नामकं छन्दः ।

भावार्थ—जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, नगण, जगण, रगण, और अन्त में एक गुरु होता है उसे प्रहर्षिणी कहते हैं । इसमें तीन तीन और दस दस अक्षरों पर विश्राम होता है । यह तेरह अक्षरों का छन्द है ।

उदाहरण—

म. न. र. ग.

ऽऽऽ ।।। ।ऽ। ऽ।ऽऽ

सत्रान्ते सचिव-सखा पुरस्क्रियाभिः
गुर्वीभिः शमित-पराजय-व्यलीकान् ।
काकुत्स्थश्चिरविरहोत्सुकावरोधान्
राजन्यान् स्वपुरनिवृत्तयेऽनुमेने ॥

अर्थ—विश्वजित् यज्ञ के समाप्त होने पर मन्त्रियों की सलाह लेकर सम्राट् रघु ने पराजित होने के कारण उत्पन्न मनमुटाव को अत्यन्त अधिक सत्कार से दूर करके प्रसन्न किय हुए और बहुत दिनों के वियोग से व्याकुल रानियों वाले राजाओं को अपनी अपनी राजधानियों को जानेकी आज्ञा दी ।

( २८ )

## वसन्त तिलका

### उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः

व्याख्या—यत्र चरणेषु तगण-भगण-जगणाः, पुनः जगणः, गुरुद्वयञ्च स्यात्तदा तत् वसन्ततिलकं नाम वृत्तम् ।

भावार्थ—जिसके प्रत्येक चरण में तगण-भगण-जगण और इनके पश्चात् एक जगण और दो गुरु हों तो उसे वसन्ततिलका कहते हैं ।

उदाहरण—

त भ ज ज ग ग

SSISIIISIISISS

गङ्गा-तरङ्गरमणीय-जटाकलापम् ,
गौरी-निरन्तर-विभूषित-वामभागम् ।
नारायणप्रियमनङ्गमदप्रहारम् ,
वाराणसी-पुरपतिं भज विश्वनाथम् , ॥

अर्थ—गङ्गा की तरङ्गों के लहराने से सुन्दर जटावाले, गौरी (पार्वती) को सदा बाएँ अङ्ग में धारण करनेवाले, विष्णु के प्यारे और कामदेव के मद को नाश करनेवाले काशी के नाथ विश्वनाथ का भजन करो ।

( २९ )

## मालिनी

### ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः

व्याख्या—यस्मिन् वृत्ते नगणद्वयम् , ततो मगणः, तदनन्तरञ्च यगणद्वयं स्यात् , तत् मालिनी नामकं छन्दः । अतएव न-न-म-य-य-युता मालिनी-इत्युक्तम् । अस्मिन् छन्दसि भोगि-

लोकैर्यतिर्भवति । भोगिभिः=अष्टाभिः, लोकैः=सप्तभिर्विरतिः स्यादिति भावः ।

भावार्थ—जिस छन्द में दो नगण, एक मगण और दो यगण हों उसे मालिनी छन्द कहते हैं । इसमें आठ और सात अक्षरों पर विराम होता है । यह पन्द्रह अक्षरों का छन्द है ।

उदाहरण—

न न म य य

। । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

अवचितवलिपुष्पा वेदिसम्मार्गदक्षा
नियमविधिजलानां बर्हिषां चोपनेत्री ।
गिरिशमुपचचार प्रत्यहं सा सुकेशी
नियमित-परिखेदा तच्छिरश्चन्द्रपादैः ॥

अर्थ—पार्वती जी प्रतिदिन पूजा के लिए पुष्प चुन लाती थीं, वेदी को लीप पोत कर साफ कर देती थीं, पूजा के निमित्त पवित्र जल और उत्तम कुशा ला देतो थीं । इस प्रकार वे शिवजी की नियम से सेवा करती थीं । शिवजी के भालस्थित शीतरश्मिचन्द्रमा की किरणों से पार्वती जी का खेद दूर हो जाता था और उन्हें इस काम में लेशमात्र भी आयास नहीं होता था ।

( ३० )

## शिखरिणी

### रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी

व्याख्या—यत्र क्रमशो यगण-मगण-नगण-सगण-भगणाः, ततश्चैको लघुरेकश्च गुरुर्भवेत् सा शिखरिणी, इयं रसैः=षड्भिः, रुद्रैः=एकादशभिश्च छिन्ना=यतिमती भवति । तद् शिखरिणी वृत्तं । षड्भिरेकादशभिश्च विरतिर्भवतीतिभावः । सप्तदशाक्षरमिदं वृत्तम् ।

भावार्थ—जिस छन्द में क्रमसे यगण, मगण, नगण, सगण और भगण तथा इनके पश्चात एक लघु और अन्तिम अक्षर गुरु होता है। उसे शिखरिणी कहते हैं। शिखरिणी छन्द सत्रह अक्षरों का होता है। इसमें छः छः अक्षरों पर और ग्यारह ग्यारह अक्षरों पर विराम होता है। महिम्न स्तोत्र और गङ्गालहरी आदि स्तोत्र इसी छन्द में हैं।

उदाहरण—

| य | म | न | स | भ | लग |
|---|---|---|---|---|---|
| ।ऽऽ | ऽऽऽ | ।।। | ।।ऽ | ऽ।। | ।ऽ |

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥

अर्थ—हे मातर्दुर्गे! इस पृथ्वी पर तेरे बहुत सज्जन पुत्र हैं, पर मैं उनमें बड़ा ही विचित्र और चञ्चल पुत्र हूँ। हे शिवे! मेरा इस प्रकार परित्याग करना (छोड़ देना) तुझे उचित नहीं है क्योंकि कभी कभी कुपुत्र हो सकता है लेकिन कुमाता कभी नहीं हो सकती। अर्थात्, पुत्र दुष्ट और नीच हो सकता है, परन्तु माता का हृदय दुष्ट कभी नहीं हो सकता। वह अपने पुत्र का सदा कल्याण ही चाहती है।

(३१)

## हरिणी

### नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी स्मृता

व्याख्या—यत्र क्रमशः-नगण-सगण-मगण-रगण-सगणाः भवन्ति ततश्च लघुरेको गुरुश्चैकः, तत् हरिणी नामकं छन्दः। अत्र षड्भिः, चतुर्भिः, सप्तभिश्च वर्णैर्विश्रामो भवति। वेदैः=चतुर्भिः। हयैः=सप्तभिः। इदमपि सप्तदशाक्षरं वृतम्।

भावार्थ—जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमसे नगण, सगण, मगण, रगण, सगण, एक लघु और एक गुरु होता है उसे हरिणी वृत्त कहते हैं, यह सत्रह अक्षरों का छन्द है । छठवें, दसवें, और सत्रहवें अक्षर पर विराम होता है ।

उदाहरण—

न स म र स ल ग

।।। ।।ऽ ऽऽऽ ऽ।ऽ ।।ऽ । ऽ

अथ स विषय-व्यावृत्तात्मा यथा विधि सूनवे
नृपतिककुदं, दत्वा यूने सितातपवारणम् ।
मुनिवन-तरुच्छायां देव्या तया सह शिश्रिये
गलितवयसामिक्ष्वाकूणामिदं हि कुलव्रतम् ॥—

अर्थ—दिलीप ने अश्वमेध यज्ञ समाप्त करने के अनन्तर सांसारिक विषयों से विरक्त होकर अपने सुयोग्य और नवयुवक पुत्र रघुको अपने सब राज चिन्ह—सफेद छाता, चवँर, सिंहासन आदि दे दिए और स्वयं महारानी सुदक्षिणा के साथ ऋषिमुनियों के तपोवन की छाया में जाकर तपस्या करने लगे क्योंकि इक्ष्वाकु राजा के वंश के वृद्ध राजाओं का यही सनातन कुलधर्म है ।

( ३२ )

## पृथ्वी

### जसौ जसयला वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः

व्याख्या—यस्य पादेषु जसौ=जगण-सगणौ, ततः जसयलाः=जगण-सगण-यगण-लघवः, गुरुश्चैकः, तदा तत् 'पृथ्वी' नामकं वृत्तं भवति । वसुभिः=अष्टाभिः । ग्रहैः=नवभिश्चात्र यतिर्भवति । सप्तदशाक्षरं छन्दः ।

भावार्थ—जिस छन्द के प्रत्येक पाद में क्रमशः जगण, सगण, जगण, सगण, यगण और एक लघु तथा एक गुरु हो उसे पृथ्वी छन्द कहते हैं । यह सत्रह अक्षरों का छन्द होता है । इसमें आठ और नौ अक्षरों पर विश्राम होता है ।

उदाहरण—

ज. स. ज. स. य. ल. ग.
ISI IIS ISI IIS ISS I S
पुरा सरसि मानसे विकचसारसालिस्खलत्-
पराग-सुरभीकृते पयसि यस्य यातं वयः ।
स पल्वल-जलेऽधुना मिलदनेकभेकाकुले
मराल-कुल-नायकः कथय रे ! कथं वर्तताम् ॥

अर्थ—जो राजहंस पहिले मानस-सरोवर के खिले हुए कमलों के गिरते हुए पराग ( रज ) से सुगन्धित स्वच्छ जल में अपनी अधिक अवस्था विता चुका है भला, कहो तो कि अब वह राजहंस मेढ़कों के टर्र टर्र से असह्य और गदले पानी से भरी हुई गड़ही में कैसे रह सकता है ।

( ३३ )

## मन्दाक्रान्ता

### मन्दाक्रान्ताऽम्बुधिरसनगैर्मो भनौ गौ ययुग्मम्

व्याख्या—यस्य पादे मगणः, भगण-नगणौ, तदनु गुरुद्वयम्, ततश्च यगणद्वयं भवति, तत् मन्दाक्रान्ता नाम वृत्तं भवति । अस्मिश्च अम्बुधि-रस-नगैः=चतुर्भिः, षड्भिः, सप्तभिश्च यतिर्भवति । सप्तदशाक्षरं छन्दः । कालिदासस्य मेघदूतकाव्यमस्मिन्नेव वृत्ते निबद्धम् ।

भावार्थ—जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण, भगण, नगण, दो गुरु और दो यगण होते हैं उसे मन्दाक्रान्ता छन्द कहते हैं । इसमें सत्रह अक्षर होते हैं और चार, छ और सात पर विराम होता है । कालिदास का मेघदूत इसी छन्द में लिखा गया है ।

उदाहरण—

म भ न ग.ग. य य

ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

शान्ताकारं भुजग-शयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगन-सदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमल-नयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

अर्थ—सुन्दर और शान्त स्वरूप, शेष नाग पर सोते हुए, नाभि से निकले हुए कमल वाले, देवताओं के स्वामी, विश्व के आधार, आकाश के समान श्याम, मेघ के समान काले, सुन्दर और सुडौल अंगों वाले, लक्ष्मी के स्वामी, कमल के समान आँखों वाले, योगियों द्वारा ध्यान से देखे जाने वाले, संसार के भय को दूर करने वाले और सब संसार के एक मात्र स्वामी विष्णु को प्रणाम है ।

( ३४ )

## शार्दूलविक्रीडित

### सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्

व्याख्या—यस्य चरणे क्रमशः-मसजस्तताः=मगण-सगण-जगण-सगण-तगण-तगणाः, ततश्चैको गुरुः स्यात्, तदा शार्दूल-

विक्रीडितं नाम वृत्तं भवति । तत् वृत्तं सूर्याश्वैः=द्वादशभिः, सप्तभिश्च विच्छिन्नं भवति । एकोनविंशत्यक्षरं छन्दः ।

भावार्थ—जिस छन्द में क्रम से मगण, सगण, जगण, सगण, दो तगण और उनके बाद एक गुरु होता है उसे शार्दूलविक्रीडित कहते हैं । इसमें बारह और सात पर विश्राम होता है । छ गण और अन्त में एक गुरु होता है । यह उन्नीस अक्षरों का छन्द हैं ।

उदाहरण—

म　स　ज　स　त　त ग.

ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ

यं ब्रह्मा-वरुणेन्द्ररुद्रमरुतस्तुन्वन्ति दिव्यैस्तवै—
वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥

अर्थ—ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र, रुद्र और वायु आदि देवता दिव्य स्तोत्रों से किसकी स्तुति करते हैं, सामवेद पढ़ने वाले विद्वान् अङ्ग वेद, क्रम और उपनिषद् सहित वेदों द्वारा जिसके गुणो का गान करते हैं ; योगीगण अपने मन को उसी में लगाकर जिसका ध्यान करते हैं और देवता एवं दैत्य दोनों ही जिसके अन्त को नहीं जानते उस परब्रह्म परमात्मा को अनेक प्रणाम हैं ।

( ३५ )

स्रग्धरा

म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्

व्याख्या—म्र-भ्नैः=मगण-रगन-भगण-नगणैः, अग्रे, यानां =यगणानाम्, त्रयेण=यगणत्रयेणेति भावः, स्रग्धरा नाम

छन्दो भवति। स्रग्धरा छन्दसः पादेषु क्रमशो मगण-रगण-भगण-नगण-यगण-यगण-यगणाः भवन्ति। तथा चेयं स्रग्धरा त्रिमुनियतियुता=त्रिभिर्मुनिभिः सप्तभिः, सप्तभिः, सप्तभिश्च, यतियुता=विरामवती भवति। एकविंशत्यक्षरं छन्दः।

भावार्थ—स्रग्धरा छन्द के प्रति चरण में क्रमशः मगण, रगण, भगण, नगण और इनके बाद तीन यगण होते हैं। इस प्रकार इसमें सात गण होते हैं और इक्कीस अक्षर होते हैं। सात सात अक्षरों पर विराम होता है।

उदाहरण—

म र भ न य य य

ऽ ऽ ऽ ऽ। ऽ ऽ।।।।।। ऽ ऽ। ऽ ऽ। ऽ ऽ

येषां श्री मद्यशोदासुतपदकमले नास्तिभक्तिर्नराणाम्

येषामाभीरकन्याप्रियगुणकथने नानुरक्ता रसज्ञा।

येषां श्रीकृष्णलीला-ललित-रसकथा-सादरौ नैव कर्णौ

धिक्तान् धिक्तान् धिगेतान् कथयति सततं कीर्तनस्थो मृदङ्गः।

अर्थ—यशोदा के पुत्र श्रीकृष्ण के चरण कमल में जिन मनुष्यों की भक्ति नहीं है, गोपकन्या—राधा के प्यारे श्रीकृष्ण के गुणों का कीर्तन करने में जिन लोगों की जिह्वा को आनन्द नहीं मिलता, श्रीकृष्ण लीला और सुन्दर सरस कथा के सुनने में जिनके कानों को प्रेम नहीं है, उन्हें 'धिक्' उन्हें 'धिक्' है और उन्हें 'धिक्' है,-इस प्रकार कीर्तन का मृदङ्ग कहता है।

( ३६ )

## वियोगिनी ( सुन्दरी )

**अयुजोर्यदि सौ जगौ युजोः**
**सभरा ल्गौ यदि सुन्दरी तदा ॥**

व्याख्या—यदि अयुजोः = विषमयोः = प्रथम-तृतीययोः पादयोः, सौ=सगणद्वयं, जगौ=जगणः, गुरुश्च स्यात्, तथा युजोः=समयोः=द्वितीयचतुर्थयोः, सगण-भगण-रगणाः, ततो लघुस्ततश्च गुरुस्तदा 'सुन्दरी' इति नाम वृत्तम्भवति। अस्या एव सुन्दर्य्या 'वियोगिनी' इत्यपि नामान्तरम्। कुत्रापि कमलेत्यपि नाम। कुमारसम्भवस्य द्वितीयसर्गे रति-विलापे वियोगिनी वृत्तमेव। रघुवंशस्याष्टमे सर्गे अजविलापेऽपीदमेव च्छन्दः। तत्र मल्लिनाथेन वैतालीयमित्यस्य नाम लिखितम्। तस्यैवायं भेदः। अत्र प्रथमतृतीयपादयोर्दश वर्णाः भवन्ति, द्वितीय-चतुर्थयोस्तु एकादश वर्णा भवन्ति।

भावार्थ—जिसके विषम अर्थात् पहले और तीसरे चरण में दो सगण, जगण और अन्त में एक गुरु होता है, और सम अर्थात् दूसरे और चौथे चरण में क्रमसे सगण, भगण और रगण तथा अन्त में एक लघु और एक गुरु होता है उसे 'सुन्दरी' छन्द कहते हैं। इसीका दूसरा नाम 'वियोगिनी' भी है। कुमारसम्भव के चौथे सर्ग में रति का विलाप इसी छन्द में है। रघुवंश के आठवें सर्ग के अज विलाप में भी यही छन्द है। वहाँ मल्लिनाथ ने इसका नाम 'वैतालीय' लिखा है वास्तव में यह वैतालीय का भेदही है। इसके सम अर्थात् द्वितीय और चतुर्थ चरण में दस अक्षर और विषम में अर्थात् प्रथम और तृतीय चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं। कहीं कहीं इस छन्द का नाम 'कमला' भी है।

उदाहरण—

स. स. ज. ग.

। । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

दुरितैरपि कर्तुमात्मसात्

स. भ. र. ल. ग.

। । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

प्रयतन्ते नृप-सूनवो हि यत्।

स. स. ज. ग.

। । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

तदुपस्थितमग्रहीदजः

स. भ. र. ल. ग.

। । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

पितुराज्ञेति न भोगतृष्णया॥

अर्थ—जिस राज्य को लेने के लिए राज-पुत्र लोग अपने पिता या बड़े भाई आदि सगे सम्बन्धियों को मार डालने के लिए अनेक प्रकार के नीच और दुष्ट उपायों से काम लेते हैं, उस मिलते हुए राज्य को अज ने पिता की आज्ञा होने के कारण स्वीकार किया। भोग विलास की लिप्सा उन्हें लेश मात्र भी नहीं थी।

( ३७ )

## पुष्पिताग्रा

अयुजि नयुगरेफतो यकारो

युजि तु नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा।

व्याख्या—यस्य अयुजि=विषमे पादे प्रथमे तृतीये च, नयुगरेफतः=नगणद्वयात् रगणः, ततो यकारः=यगणः स्यात्, युजि च=समे-द्वितीये चतुर्थे च, नजौ=नगण-जगणौ,

जर-गाः=जगण-रगणौ गुरुश्च स्यात्, तत् पुष्पिताग्रा नाम वृत्तं स्यात् ।

भावार्थ—जिसके विषम अर्थात् पहले और तीसरे चरण में दो नगण रगण और यगण क्रमशः होते हैं, तथा सम दूसरे और चौथे चरण में क्रम से नगण, जगण, जगण, रगण, और गुरु होते हैं उसे पुष्पिताग्रा छन्द कहते हैं । इसके प्रथम और तृतीय चरण में बारह अक्षर और द्वितीय चतुर्थ में तेरह अक्षर होते हैं ।

उदाहरण—

न न र य

।।। ।।। ऽ।ऽ ।ऽऽ

अथ विधिमवसाय्य शास्त्रदृष्टं

न ज ज र ग

।।। ।ऽ। ।ऽ। ऽ।ऽ ऽ

दिवसमुखोचितमञ्चिताक्षिपक्ष्मा ।

कुशल-विरचितानुकूलवेशः

क्षितिपसमाजमगात् स्वयम्वरस्थम् ॥

अर्थ—सोकर उठने वाला सुन्दर पलकों वाला अज, प्रातःकाल की नित्य क्रियाओं से छुट्टी पाकर अच्छे चतुर कारीगरों से सजाया जाकर स्वयम्वर में बैठे हुये राजाओं के समाज में पहुँचा ।

( ३८ )

## आख्यानकी

आख्यानकी तौ ज-गुरू ग ओजे

जतावनोजे जगुरू गुरुश्चेत्

व्याख्या—यदि चेत् ओजे=विषमे पादे, प्रथमे, तृतीये च, तौ=तगणौ, ज-गुरू=जगणः गुरुद्वयश्च, तदनु गः=

गुरुरेकः स्यात् तथा अनोजे=समे पादे, द्वितीये, चतुर्थे च जतौ=जगण—तगणौ, जगुरू=जगणः, गुरुद्वयश्च, ततः गः=गुरुरेकः स्यात्सदा तदाख्यानकी नाम वृत्तं स्यात्।

अयं भावः—

प्रथम-तृतीय-चरणयोः—क्रमशः द्वौ तगणौ, जगणः ततश्च गुरुद्वयं भवति, द्वितीय-चतुर्थयोः क्रमशः जगण-तगण-जगणाः, गुरुद्वयश्च भवति।

भावार्थ—यदि पहिले और तीसरे चरण में दो तगण, जगण और अन्त में दो गुरु हों, तथा दूसरे और चौथे में क्रम से जगण, तगण, जगण और दो गुरु हों उसे आख्यानकी छन्द कहते हैं। और प्रत्येक पाद में ग्यारह वर्ण होते हैं।

विवरण—आख्यानकी छन्द में पहला और तीसरा चरण इन्द्रवज्रा का होता है। तथा दूसरा और चौथा उपेन्द्रवज्रा का होता है।

उदाहरण—

त त ज ग.ग.

ऽऽ।ऽऽ।।ऽ।ऽऽ

वर्णं प्रकर्षे सति कर्णिकारं

ज. त. ज. ग.ग.

।ऽ।ऽऽ।।ऽ।ऽऽ

दुनोति निर्गन्ध तयास्म चेतः।

प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां

पराङ्मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः॥

अर्थ—कनैल का फूल देखने में अत्यन्त सुन्दर होने पर भी गन्ध-रहित होने के कारण चित्त को बहुत ही कष्ट देता था। प्रायः देखा जाता है कि ब्रह्मा की सृष्टि में गुणों की पूर्णता नहीं रहती।

( ३९ )

## विपरीताख्यानकी

**जतौ जगौ गो विषमे, समे चेत्**
**तौ जगौ ग एषा विपरीतपूर्वा ।**

व्याख्या—विषमे=प्रथमे तृतीये च चरणे जतौ=जगण-तगणौ, जगौ=जगणः गुरुश्च, तदनन्तरं गः=पुनरपि गुरुरेकः स्यात्, तथा समे=द्वितीये चतुर्थे च, तौ=तगणद्वयम्, जगौ जगणः गुरुश्च, तदनन्तरं पुनः गः=गुरुः स्यात्तदा विपरीतपूर्वा आख्यानकी नामवृत्तं स्यात् 'विपरीताख्यानकी'—इत्यस्य नाम ।

भावार्थ—जिसके पहले और तीसरे चरण में क्रम से जगण, तगण, जगण और दो गुरु हों तथा दूसरे और चौथे चरण में दो तगण, जगण और दो गुरु हों उसे विपरीताख्यानकी छन्द कहते हैं ।

विवरण—इसमें पहला चरण उपेन्द्रवज्रा का और अन्य तीन इन्द्रवज्रा के होते हैं ।

उदाहरणम्—

ज. त. ज. ग.ग.
।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽऽ
अथाङ्गुलिभ्यां हरितालमार्द्रं

त. त. ज. ग.ग.
ऽऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽऽ
माङ्गल्यमादाय मनःशिलाञ्च ।

ज. त. ज. ग.ग.
।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽऽ
श्रुतिप्रसक्तामलदन्तपत्रं

त. त. ज. ग.ग.
ऽऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽऽ
माता तदीयं मुखमुन्नमय्य ॥

अर्थ—विवाह के समय पार्वती की माता मेना ने कानों में लगे हुए विशुद्ध हाथी दांतों वाले उसके मुंह को ऊपर उठा कर उसमें दो अंगुलियों से गोला हरताल और मैनशिला मङ्गल के लिये लगा दीं ।

( ४० )

## हरिणप्लुता

सयुगात् सलघू विषमे गुरु-
युंजि नभौ भरकौ हरिणप्लुता ।

व्याख्या—विषमे=प्रथमे तृतीये च चरणे, सयुगात्=सगणद्वयात्, परं सगणः, लघुरेको गुरुश्चैकः स्यात्, तथा युजि =समे, द्वितीये, चतुर्थे च, नभौ=नगण-भगणौ, भरकौ=भगण रगणौ यदि स्यातां तदा हरिणप्लुता नामकं छन्दः स्यात् ।

भावार्थ—जिसके पहले और तीसरे पाद में क्रमशः तीन सगण और एक लघु एवं एक गुरु हो, तथा दूसरे और चौथे में क्रमशः नगण, भगण-भगण और रगण हों उसे हरिणप्लुता छन्द कहते हैं ।

उदाहरण—

स. स. स. ल.ग.
।। ऽ ।। ऽ ।। ऽ । ऽ
स्फुट फेनचया हरिणप्लुता
न. भ. भ. र.
।।। ऽ ।। ऽ ।। ऽ । ऽ
वलिमनोज्ञतटा तरणेः सुता ।
स्र-कलहंस-कुलारव शालिनी
विहरतो हरतिस्म हरेर्मनः ।

अर्थ—स्वच्छ फेन से भरी हुई, हरिणों के कूदने से सुन्दर, पूजा बलि से मनोहर किनारे वाली और बत्तकों के सुन्दर शब्दों से शोभित यमुना तट पर टहलते हुये श्रीकृष्ण के मन को हरण करती थी ।

(४१)

## हँसी

हंसी ज्ञेया मभनगयुता ।

व्याख्या—यस्याः पादेषु क्रमशो मगण-भगण-नगणाः, ततश्चैको गुरुः स्याच्चदा तत् हंसी नामकं छन्दः । नवाक्षरं छन्दः ।

भावार्थ—जिस छन्द के प्रत्येक पाद में क्रम से मगण, भगण, नगण और एक गुरु हो उसे हंसी छन्द कहते हैं ।

| म० | | | भ० | | | न० | | | गु० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | । | । | । | । | । | ऽ |
| हिं | सा | द्वे | षौ | प्र | कृ | ति | सु | ल | भौ |

दुर्वृत्तानामनुदिनमतः ।
तैः संसारो घृणितनरकः
रम्योऽप्येवं सदयहृदयैः ।

टीका—दुर्वृत्तानां अनुदिनं हिंसाद्वेषौ प्रकृतिसुलभौ, अतः तैः (दुर्वृत्तैः) "अयं" संसारः घृणितनरकः एवं सदयहृदयैः (सत्पुरुषैः) रम्योऽपि, प्रतीयते ॥

---

## छन्दः प्रश्नाः ।

१. मणिवन्धस्यान्ते—एकगुरुयोजने किं छन्दो भवति ?

२. आद्यास्त्रयः अष्टमो दशमः द्वादशः त्रयोदशश्च यत्र वृत्ते गुरवस्तत्किं नामधेयं वृत्तम् ?

३. पृथ्वी-हरिणी-वृत्तयोः कस्मिन् विषये भेदः कस्मिंश्च अभेदः ? सलक्षणमुत्तरणीयम् ?

४. चतुर्षु पादेषु एकसवर्णानां गुरुत्वे चतुर्भिश्चतुर्भिश्च वर्णैर्विरामे किन्नाम वृत्तम् ?

५. इन्द्रवज्रोपेन्द्रवज्रयोः कुत्र भेदः ?

६. उपजातिवृत्ते कस्मिन् पादे कस्य च्छन्दसो लक्षणं संघटते ?

७. वंशस्थेन्द्रवंशयोः को भेदः ?

८. यस्य वृत्तस्य पादचतुष्टये द्वितीय-चतुर्थाष्टमैकादश-त्रयोदशचतुर्दशाक्षराणां गुरुत्वमष्टभिरष्टभिः षष्ठैः षष्ठैश्च वर्णैर्विरामस्तत्किं नामधेयं छन्दः।

९. यस्य वृत्तस्य १-७-८-९-१०-११-१२-१४-१५-१६ अक्षराणां ह्रस्वत्वं भवेत् ६-६; ११, ११ अक्षरैश्च विश्रामः, तस्य किं नाम ?

१०. चम्पकमाला-मणिबन्धवृत्तयोः को भेदः ?

११. पद्यं कतिविधम् ?

१२. पद्यस्य लक्षणं सोदाहरणं लिख्यताम्।

१३. वृत्तं कतिविधम् ? विषमवृत्तस्य लक्षणं लिख्यताम्।

१४. यतिः का भवति, कानि च तन्नामान्तराणि ?

१५. पादः को भवति, कति च भवन्ति पादाः प्रतिवृत्तम् ?

१६. यस्मिन् वृत्ते इन्द्रवज्रोपेन्द्रवज्रयोः द्वौ द्वौ पादौ तस्य किन्नामधेयं किञ्च तल्लक्षणम् ?

१७. उपजातिविपरीतपूर्वयोः को भेदः ?

१८. चम्पकमाला छन्दसः अन्त्याक्षरविहीनत्वात् किंनाम-वृत्तं भवति, तस्य च नामलक्षणोदाहरणानि देयानि।

१९. यत्र रथोद्धताया नवमाक्षरं दशमवत् दशमं च नवमवच्चेत्तत्किन्नाम तच्छन्दः किञ्च तल्लक्षणम् ? उदाहरणेन स्पष्टीकर्तव्यम्।

२०. तोटकवृत्तस्य किं लक्षणम्? यदि तोटकच्छन्दसः पञ्चमवर्णो दीर्घः स्यात् षष्ठाक्षरञ्च लघु स्यात् तर्हि किं नाम च्छन्दः। लक्षणसहितमुदाहरणं दीयताम्।

२१. स्वागताछन्दसो दशमाक्षरे नवमवत्कृते नवमाक्षरे च दशमवत्कृते किन्नामवृत्तम्? लक्षणं प्रदर्श्योदाहरणेन विशदीक्रियताम्?

२२. आर्योपगीत्योः भेदः साधु प्रदर्शनीयः।

२३. गीत्युपगीत्योः कुत्र द्वैविध्यम्?

२४. उपेन्द्रवज्राचरणानामुपान्त्यवर्णेषु लघुषु कृतेषु किन्नाम वृत्तम्?

२५. यस्य छन्दसः १-२-३-८-१०-१२-१३ वर्णा गुरवः किं नामधेयं तस्य?

२६. यत्र सप्तमदशमाक्षरे विहाय सर्वे वर्णा गुरवः यतिश्च पञ्चमसप्तमाक्षरैः किं नामधेयं तस्य वृत्तस्य? लक्षणसहित-मुदाहरणं दीयताम्।

२७. यदि कस्मिंश्चिदेकाक्षरच्छन्दसि द्वितीयचतुर्थपञ्चम-षष्ठाष्टमाक्षराणि लघूनि भवेयुः, तदा किं नाम तच्छन्दो भवति? सोदाहरणं लक्षणं प्रदर्श्यताम्।

२८. मन्दाक्रान्ताया अन्त्ययतिराहित्येन किं छन्दः, किञ्च तल्लक्षणम्? उदाह्रियताम्।

२९. वंशस्थचरणानां पूर्वो वर्णो गुरुश्चेत्किं किमपि वृत्तं भवति, यदि भवति तदा तल्लक्षणं सोदाहरणं लिखत।

३०. प्रतिचरणमाद्यवर्णचतुष्टयेषु अगुरुषु पञ्चमषष्ठयोश्च दीर्घयोः किं नामधेयं वृत्तम्? लक्षणोदाहरणप्रदर्शनेन विशदीक्रियताम्।

३१. आद्यचतुर्थपञ्चमवर्णानां गुरुत्वे किं छन्दः? उदा-ह्रियताम्।

३२. यत्र चतुर्थपञ्चमात्तरौ लघू स्यातां किम् नामधेयं तद्वृत्तम् ?

३३. मन्दाक्रान्ता-हंसीछन्दसोः को भेदः ?

३४. यत्र छन्दसि षष्ठ-नवमवर्णौ लघू स्याताम् चतुर्भिस्सप्तभिश्च विरतिः तस्य लक्षणं सोदाहरणं लिखत ।

३५. गुरुसंज्ञा केषां भवति इति सुस्पष्टं प्रदर्श्यताम् ।

३६. यत्र त्रिपद् सप्तमनवमाक्षराणि ह्रस्वाणि तस्य किं नामधेयम् ? लक्षणोदाहरणाभ्यां विशदीक्रियताम् ।

३७. मणिबन्धस्यान्ते एकगुरुयोजने किं छन्दः ?

३८. यत्र वंशस्थपादानां प्रथमवर्णा गुरवः किं नामधेयं भवति तस्यच्छन्दसः ? उदाहरणलक्षणद्वारा विशदीक्रियतात् ।

३९. यदि तोटकवृत्तस्य पञ्चमो वर्णो दीर्घः षष्ठश्च ह्रस्वः तर्हि किं नाम तस्य छन्दसः ?

४०. भुजङ्गप्रयातच्छन्दसि यदि चतुर्थ-सप्तम-दशम द्वादश-वर्णा गुरवः स्युस्तर्हि किन्नामधेयं तस्य छन्दसः ?

४१. यदि द्रुतविलम्बितच्छन्दसः आद्यतृतीययोः पादयोः प्रथमाक्षरं लुप्तं स्यात्तर्हि किम्भवति तस्य वृत्तस्य नाम ? उदाहरणेन विशदीक्रियताम् ।

४२. यद्युपेन्द्रवज्राछन्दसः प्रतिचरणे एकादशमा वर्णा ह्रस्वास्तन्नामलक्षणोदाहरणानि देयानि ।

२०. तोटकवृत्तस्य किं लक्षणम् ? यदि तोटकच्छन्दसः पञ्चमवर्णो दीर्घः स्यात् षष्ठाक्षरश्च लघु स्यात् तर्हि किं नाम च्छन्दः । लक्षणसहितमुदाहरणं दीयताम् ।

२१. स्वागताच्छन्दसो दशमाक्षरे नवमवत्कृते नवमाक्षरे च दशमवत्कृते किन्नामवृत्तम् ? लक्षणं प्रदर्श्योदाहरणेन विशदीक्रियताम् ?

२२. आर्योपगीत्योः भेदः साधु प्रदर्शनीयः ।

२३. गीत्युपगीत्योः कुत्र द्वैविध्यम् ?

२४. उपेन्द्रवज्राचरणानामुपान्त्यवर्णेषु लघुषु कृतेषु किन्नाम वृत्तम् ?

२५. यस्य छन्दसः १-२-३-८-१०-१२-१३ वर्णा गुरवः किं नामधेयं तस्य ?

२६. यत्र सप्तमदशमाक्षरे विहाय सर्वे वर्णा गुरवः यतिश्च पञ्चमसप्तमाक्षरैः किं नामधेयं तस्य वृत्तस्य ? लक्षणसहितमुदाहरणं दीयताम् ।

२७. यदि कस्मिंश्चिदेकाक्षरच्छन्दसि द्वितीयचतुर्थपञ्चमषष्ठाष्टमाक्षराणि लघूनि भवेयुः, तदा किं नाम तच्छन्दो भवति ? सोदाहरणं लक्षणं प्रदर्श्यताम् ।

२८. मन्दाक्रान्ताया अन्त्ययतिराहित्येन किं छन्दः, किञ्च तल्लक्षणम् ? उदाह्रियताम् ।

२९. वंशस्थचरणानां पूर्वो वर्णो गुरुश्चेत्किं किमपि वृत्तं भवति, यदि भवति तदा तल्लक्षणं सोदाहरणं लिखत ।

३०. प्रतिचरणमाद्यवर्णचतुष्टयेषु अगुरुषु पञ्चमषष्ठयोश्च दीर्घयोः किं नामधेयं वृत्तम् ? लक्षणोदाहरणप्रदर्शनेन विशदीक्रियताम् ।

३१. आद्यचतुर्थपञ्चमवर्णानां गुरुत्वे किं छन्दः ? उदाह्रियताम् ।

३२. यत्र चतुर्थपञ्चमाक्षरौ लघू स्यातां किम् नामधेयं तद्वृत्तस्य ?

३३. मन्दाक्रान्ता-हंसीछन्दसोः को भेदः ?

३४. यत्र छन्दसि षष्ठ-नवमवर्णौ लघू स्याताम् चतुर्भि-स्सप्तभिश्च विरतिः तस्य लक्षणं सोदाहरणं लिखत ।

३५. गुरुसंज्ञा केषां भवति इति सुस्पष्टं प्रदर्श्यताम् ।

३६. यत्र त्रिषट् सप्तमनवमाक्षराणि ह्रस्वाणि तस्य किं नामधेयम् ? लक्षणोदाहरणाभ्यां विशदीक्रियताम् ।

३७. मणिबन्धस्यान्ते एकगुरुयोजने किं छन्दः ?

३८. यत्र वंशस्थपादानां प्रथमवर्णा गुरवः किं नामधेयं भवति तस्यच्छन्दसः ? उदाहरणलक्षणद्वारा विशदीक्रियतात् ।

३९. यदि तोटकवृत्तस्य पञ्चमो वर्णो दीर्घः षष्ठश्च ह्रस्वः तर्हि किं नाम तस्य छन्दसः ?

४०. भुजङ्गप्रयातच्छन्दसि यदि चतुर्थ-सप्तम-दशम द्वादश-वर्णा गुरवः स्युस्तर्हि किन्नामधेयं तस्य छन्दसः ?

४१. यदि द्रुतविलम्बितच्छन्दसः आद्यतृतीययोः पादयोः प्रथमाक्षरं लुप्तं स्यात्तर्हि किम्भवति तस्य वृत्तस्य नाम ? उदाहरणेन विशदीक्रियताम् ।

४२. यद्युपेन्द्रवज्राछन्दसः प्रतिचरणे एकादशमा वर्णा ह्रस्वास्तन्नामलक्षणोदाहरणानि देयानि ।

# तर्क-संग्रह ।

सम्पादक—श्रीकेदारनाथ शर्म्मा सारस्वत,

सुप्रभात—सम्पादक ।

यह पुस्तक प्रथम परीक्षार्थी छात्रों के लिये कितनी उपयुक्त होगी—यह देखने से ही मालूम होगा। तर्क-संग्रह जैसी कठिन पुस्तक को किस प्रकार सरल, सुबोध और परीक्षोपयोगी बनाया गया है—यह देख कर अध्यापक और छात्र दोनों ही प्रसन्न हो जायँगे। यद्यपि तर्क-संग्रह की अनेक टीकाएँ और परीक्षोपयोगी संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। लेकिन यह भी देखने ही योग्य है। इसमें विना गुरू से पढ़े हुए भी छात्र सिर्फ पुस्तक को याद कर परीक्षा पास कर सकते हैं। अधिक कहने की आवश्यकता नहीं। बस, इसे मँगाइये और लाभ उठाइये।

मूल्य—वही चार आने ।

( यन्त्रस्थ )

पता—

(१) मैनेजर—शारदा भवन, अगस्तकुण्डा बनारस ।